Toppersnotes®
Unleash the topper in you

BSSC

इंटर-स्तरीय

सयुंक्त प्रतियोगिता परीक्षा

भाग - 1

सामान्य अध्ययन

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	भारत, आकार और स्थिति	1
2	भारत के भौगोलिक प्रदेश	3
3	भारत का अपवाह तंत्र	19
4	भारत की जलवायु	29
5	प्रमुख फसलें	39
6	ऊर्जा संसाधन	45
7	भारत में खनिज	55
8	भारत का औद्योगिक क्षेत्र	59
9	अर्थव्यवस्था के मूल सिद्धांत	64
10	मुद्रा, मुद्रा आपूर्ति और मौद्रिक नीति	69
11	मुद्रास्फीति	74
12	बाह्य क्षेत्र और भुगतान संतुलन	78
13	उद्योग	84
14	सेवा क्षेत्र	91
15	कृषि	95
16	सतत विकास	107
17	जनसंख्या	112
18	संविधान सभा	115
19	संविधान की विशेषताएँ	119
20	प्रस्तावना	123
21	मूल अधिकार	126
22	राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांत	136
23	मौलिक कर्तव्य	138

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	राष्ट्रपति	140
25	प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद्	148
26	संसद	152
27	सर्वोच्च न्यायालय और न्यायिक समीक्षा	166
28	संघवाद	172
29	पंचायती राज	178
30	बिहार का इतिहास	182

1
CHAPTER

भारत, आकार और स्थिति

भारत विश्व की सबसे पुरानी और महान सभ्यताओं में से एक है। यह विभिन्न संस्कृतियों का संगम स्थल भी है। भारत की संस्कृति और सामाजिक-आर्थिक स्थिति इसकी विविध भौगोलिक विशेषताओं से प्रभावित है।

भारत विश्व का सातवाँ सबसे बड़ा (विश्व के कुल क्षेत्र का 2.42%) और सबसे अधिक जनसंख्या वाला (विश्व की कुल जनसंख्या का 17.5%) देश है।

भारत के उत्तर में महान हिमालय पर्वत श्रृंखला स्थित है, जो इसकी सीमा को प्राकृतिक रूप से संरक्षित करती है। दक्षिण की ओर बढ़ते हुए भारत धीरे-धीरे संकुचित होता है और कर्क रेखा तक पहुँचने के बाद, यह और संकरा होते हुए हिंद महासागर में समाहित हो जाता है। भारत के पूर्व में बंगाल की खाड़ी और पश्चिम में अरब सागर स्थित हैं।

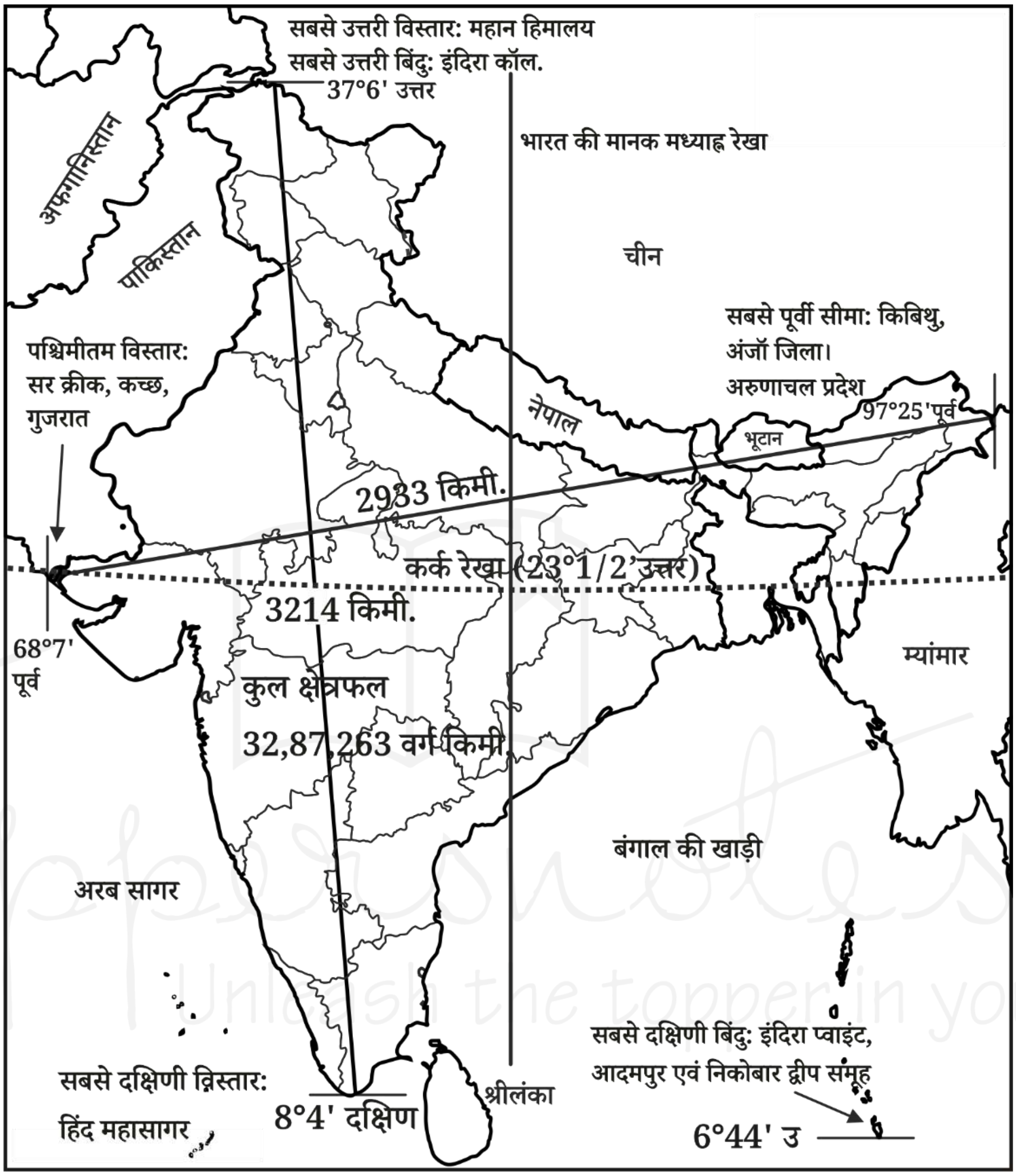

- यह उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है।
- अक्षांशीय विस्तार (3214 Km): 8°4' उत्तर से 37°6' उत्तर
- देशांतरीय विस्तार (2933 Km): 68°7' पूर्व से 97°25' पूर्व
- देश का सबसे दक्षिणी छोर पिग्मेलियन प्वाइंट या इंदिरा प्वाइंट है, जो अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में स्थित है।
- देश का सबसे उत्तरी छोर इंदिरा कोल है, जो जम्मू और कश्मीर में स्थित है।
- कश्मीर में इंदिरा कोल से कन्याकुमारी तक उत्तर-दक्षिण विस्तार 3,214 किमी है।
- कच्छ के रण से अरुणाचल प्रदेश तक पूर्व-पश्चिम चौड़ाई 2,933 किमी है।
- क्षेत्रफल: 32,87,263 वर्ग किलोमीटर
- भारत की कुल भूमि सीमा 15,200 किलोमीटर है।
- भारत की कुल तटरेखा 7,516.6 किलोमीटर है (मुख्य भूमि भारत + द्वीप समूह)
- द्वीपों को छोड़कर भारत की तटरेखा 6,100 किलोमीटर है।

कर्क रेखा इन राज्यों से होकर गुजरती है: गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा और मिजोरम। (कुल 8)

भारत के पड़ोसी देश

उत्तर-पश्चिम	➢ अफ़ग़ानिस्तान और पाकिस्तान ➢ भारत-पाकिस्तान सीमा: रेडक्लिफ़ रेखा ➢ पाकिस्तान-अफ़ग़ानिस्तान सीमा: डूरंड रेखा
उत्तर	➢ चीन, भूटान और नेपाल ➢ भारत-चीन सीमा: मैकमोहन रेखा,जॉनसन रेखा
पूर्व	➢ म्यांमार, बांग्लादेश ➢ बांग्लादेश के साथ सबसे लंबी सीमा
दक्षिण	➢ श्रीलंका ➢ पाक जलडमरूमध्य और मन्नार की खाड़ी द्वारा अलग किया गया

अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं को साझा करने वाले भारतीय राज्य:

बांग्लादेश	5 राज्य: पश्चिम बंगाल, मिजोरम, मेघालय, त्रिपुरा, और असम (कुल: 4096 किमी)
चीन	4 राज्य और 1 केंद्र शासित प्रदेश हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश और लद्दाख (कुल: 3488 किमी)
पाकिस्तान	3 राज्य और 2 केंद्र शासित प्रदेश: पंजाब, गुजरात, राजस्थान, और जम्मू-कश्मीर तथा लद्दाख (कुल: 3323 किमी)
नेपाल	5 राज्य: उत्तर प्रदेश, बिहार, उत्तराखंड, सिक्किम, और पश्चिम बंगाल (कुल: 1751 किमी)
म्यांमार	4 राज्य: अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मिजोरम, और नागालैंड (कुल: 1643 किमी)
भूटान	4 राज्य: अरुणाचल प्रदेश, असम, सिक्किम, और पश्चिम बंगाल (कुल: 699 किमी)
अफगानिस्तान	1 केंद्र शासित प्रदेश: लद्दाख (कुल: 106 किमी)

➢ **भारतीय मानक समय रेखा**
- ✓ 82°30'पूर्व, मिर्ज़ापुर (यूपी) - भारत का मानक तिथि रेखा।
- ✓ यह ग्रीनविच मीन टाइम से 5 घंटे, 30 मिनट आगे है।
- ✓ भारतीय मानक रेखा उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा और आंध्र प्रदेश से होकर गुजरती है।
- ✓ भारत के तटीय राज्य (9): पश्चिम बंगाल, ओडिशा, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, गोवा, महाराष्ट्र, और गुजरात।

विभिन्न जलडमरूमध्य और उनकी स्थिति

➢ 10° **जलडमरूमध्य**
- ✓ अंडमान द्वीपों और निकोबार द्वीपों को बंगाल की खाड़ी में अलग करता है।

➢ 9° **जलडमरूमध्य**
- ✓ मिनिकॉय द्वीप को लक्षद्वीप द्वीपसमूह से अलग करता है।

➢ 8° **जलडमरूमध्य**
- ✓ मालदीव और भारत के बीच समुद्री सीमा।
- ✓ मिनिकॉय और मालदीव के द्वीपों को अलग करता है।
- ✓ इसे पारंपरिक रूप से मलिकू कंडू और मामाले कंडू दिवेही के नाम से जाना जाता है।

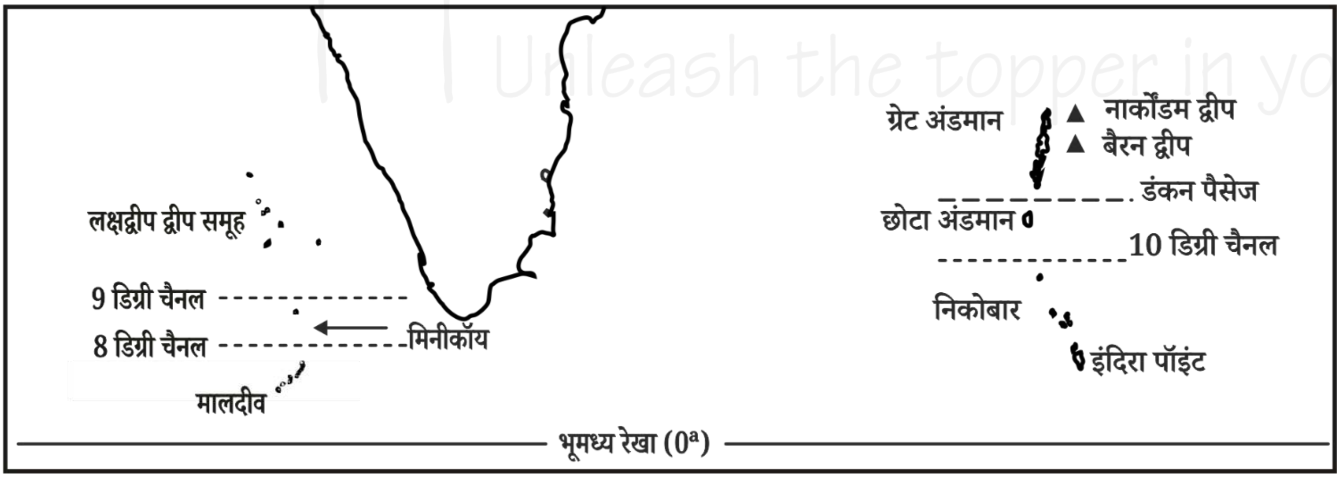

डंकन जलडमरूमध्य यह ग्रेट अंडमान और लिटिल अंडमान के बीच स्थित है।

महत्वपूर्ण तथ्य

- ➢ क्षेत्रफल के अनुसार सबसे बड़ा राज्य: राजस्थान
- ➢ क्षेत्रफल के अनुसार सबसे छोटा राज्य: गोवा
- ➢ अधिकतम राज्यों के साथ सीमा साझा करने वाला राज्य : उत्तर प्रदेश (8 राज्य और 1 केंद्र शासित प्रदेश - उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, झारखंड, बिहार, छत्तीसगढ़ और दिल्ली)
- ➢ देश का सबसे ऊँचा स्थान: गॉडविन ऑस्टिन (K2)

2 CHAPTER भारत के भौगोलिक प्रदेश

भारत विभिन्न भूवैज्ञानिक कालों के दौरान निर्मित एक विशाल भूभाग है, जिसने इसके भू-संरचना को प्रभावित किया है। भूवैज्ञानिक संरचनाओं के अलावा, अपक्षय, अपरदन और निक्षेपण जैसी अनेक प्रक्रियाओं ने इस संरचना को इसके वर्तमान स्वरूप में निर्मित और संशोधित किया है।

भारत में पृथ्वी की सभी प्रमुख भौतिक विशेषताएँ मौजूद हैं, जैसे पहाड़, मैदान, रेगिस्तान, पठार और द्वीप। भौतिक विशेषताओं के आधार पर भारत को 6 भौगोलिक प्रभागों में बांटा गया है:

A. हिमालयन पर्वत (Himalayan Mountains)
B. उत्तरी मैदानी प्रदेश (Northern Plain)
C. दक्कन पठार/प्रायद्वीपीय पठारी प्रदेश (Peninsular Plateau)
D. भारतीय रेगिस्तान (Indian Desert)
E. तटीय मैदान (Coastal Plains)
F. द्वीप समूह (Islands)

हिमालयन पर्वत

हिमालय सबसे युवा पर्वतों में से एक है। हिमालय का निर्माण लगभग 6 करोड़ वर्ष पहले शुरू हुआ था। हिमालय के निर्माण की प्रक्रिया और इसके विभिन्न चरण निम्नलिखित चित्रों में दर्शाए गए हैं।

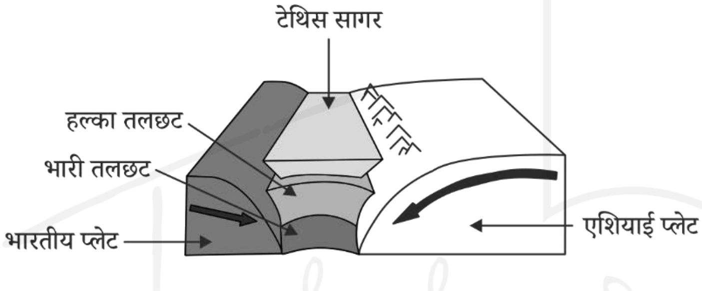

6 करोड़ वर्ष पूर्व

भारतीय प्लेट एशियाई प्लेट से टकराती है। यह हलचल हिमालय पर्वतमाला की उत्पत्ति का कारण बनती है, क्योंकि दोनों प्लेटें एक दूसरे को धक्का देती हैं और पृथ्वी की पपड़ी ऊपर की ओर दब जाती है।

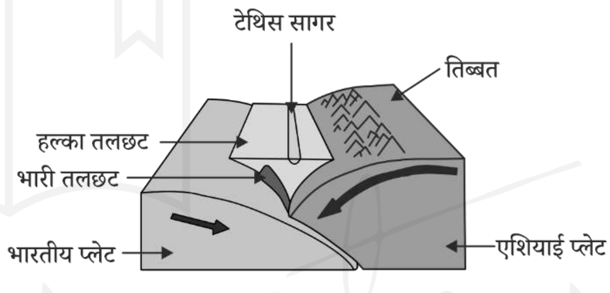

4 करोड़ वर्ष पहले

महासागर तल पर भारी तलछट के कारण एशियाई प्लेट के नीचे धंस गई, जिससे टेथिस सागर धीरे-धीरे विलुप्त हो गया। भारतीय प्लेट अभी भी तिब्बत में और गहराई तक धंस रही है।

- 5 लाख वर्ग किलोमीटर में फैला
- दुनिया की सबसे ऊँची और सबसे नई वलित पर्वत श्रृंखला।
- दुनिया के सबसे अधिक भूकंप संभावित क्षेत्रों में से एक।
- निर्माण काल- तृतीयक काल
- लंबाई: पश्चिम-उत्तर-पश्चिम से पूर्व-दक्षिण-पूर्व दिशा में 2,400 किमी लंबे चाप के रूप में फैला हुआ।
    - ✓ पश्चिमी छोर: नंगा पर्वत
    - ✓ पूर्वी छोर: नामचा बारवा
- चौड़ाई: 400 किमी - 150 किमी (पश्चिम में चौड़ा तथा पूर्व में संकरा)।
- पश्चिमी भाग की तुलना में पूर्वी भाग में ऊँचाई में भिन्नता अधिक है।

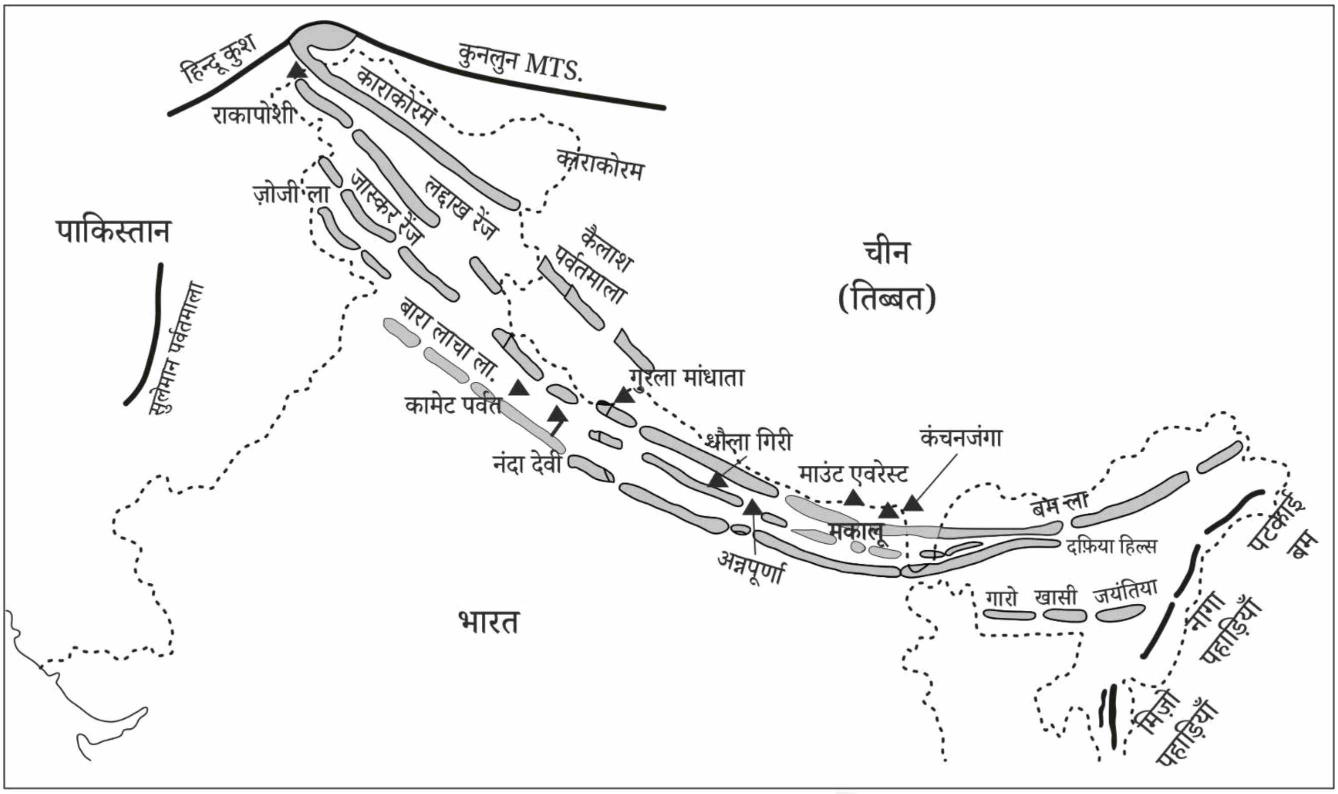

हिमालय के उपविभाग

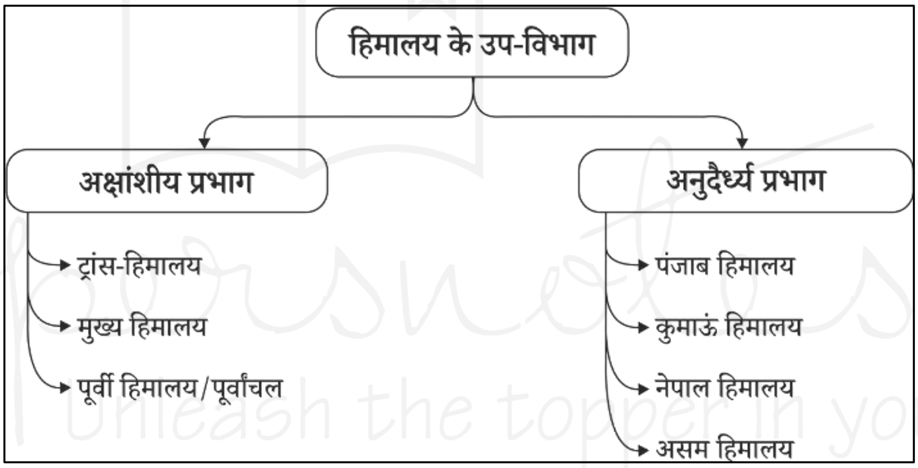

हिमालय का अक्षांशीय विभाजन

i. ट्रांस हिमालय

- स्थान: महान हिमालय के उत्तर में स्थित।
- दूसरा नाम: इसे तिब्बती हिमालय भी कहा जाता है क्योंकि इसका अधिकांश भाग तिब्बत में है।
- ट्रांस-हिमालयन पर्वतमाला पामीर गाँठ (नॉट) से शुरू होती है और इसमें जास्कर, लद्दाख, कैलाश और काराकोरम पर्वतमाला शामिल हैं।
- जलवायु और वनस्पति: शुष्क और बंजर स्थिति, मुख्य हिमालय की वृष्टि छाया क्षेत्र में होने के कारण वनस्पति की कमी।
- लंबाई: पूर्व-पश्चिम दिशा में लगभग 1,000 किमी।
- औसत ऊँचाई: समुद्र तल से औसतन 5000 मीटर
- औसत चौड़ाई - 40 किमी- 225 किमी (सुदूर-मध्य भाग)।

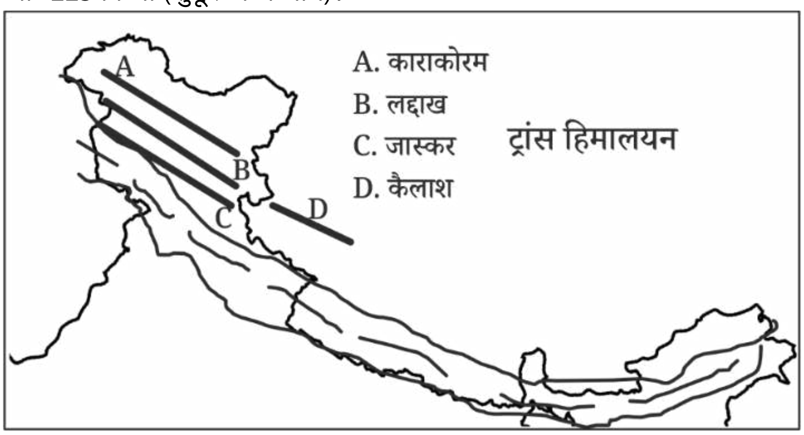

- प्रमुख श्रेणियाँ:

काराकोरम श्रेणी	➢ भारत में ट्रांस-हिमालय की सबसे उत्तरी और सबसे ऊँची श्रेणी, सबसे लम्बी श्रेणी ➢ इसे कृष्णागिरि श्रेणी के नाम से भी जाना जाता है ➢ पामीर पठार से पूर्व की ओर कैलाश पर्वत तक फैली हुई है। ➢ यह अफगानिस्तान और चीन के साथ भारत की सीमा बनाती है। ➢ मुख्य रूप से कश्मीर और लद्दाख में स्थित है और बाल्टोरो, सियाचिन, बटुरा, रेमो ग्लेशियर जैसे अल्पाइन ग्लेशियरों के लिए प्रसिद्ध है। ➢ सबसे ऊँची चोटी: गॉडविन ऑस्टिन (K2) (8611 मीटर) (भारत की सबसे ऊँची पर्वत चोटी) ➢ नुब्रा घाटी काराकोरम और लद्दाख पर्वतमाला के बीच स्थित है। (सियाचिन हिमनद)
लद्दाख श्रेणी	➢ कराकोरम रेंज की सबसे दक्षिणी सीमा। ➢ सबसे ऊँची चोटी - माउंट राकापोशी (7788 मीटर) ➢ तिब्बत में कैलाश रेंज के साथ विलीन हो जाती है। ➢ लद्दाख भारत का सबसे ऊँचा पठार है। (4800 मीटर)
जास्कर श्रेणी	➢ यह ट्रांस हिमालय की सबसे दक्षिणी श्रेणी है। ➢ विस्तार: सुरू घाटी से कर्णाली नदी तक। ➢ सबसे ऊँची चोटी- कामेट ➢ प्रमुख नदियाँ- हनले, खुरना, जांस्कर, सुरू (सिंधु) और शिंगो नदियाँ।
कैलाश श्रेणी	➢ लद्दाख श्रेणी की शाखा। ➢ सबसे ऊँची चोटी - कैलाश पर्वत (6714 मीटर)। ➢ सिंधु नदी यहीं से निकलती है। ➢ कैलाश पर्वत के दक्षिणी भाग के पास मानसरोवर झील स्थित है।

लद्दाख पठार
- ➢ भारत का सबसे ऊँचा पठार
- ➢ शीत मरुस्थल मुख्य हिमालय के वर्षाछाया क्षेत्र में स्थित है।
- ➢ स्थिति- काराकोरम व लद्दाख श्रेणी के मध्य।
- ➢ झीलें - पैंगोंग त्सो, त्सो मोरीरी खारे पानी की झीलें।

हिमालय पर्वत श्रेणी

- ➢ यह ट्रांस हिमालय के दक्षिण में स्थित है और हिमालय पर्वत श्रृंखला की सबसे लंबी और सबसे ऊंची पर्वत श्रृंखला है। इसे तीन भागों में बांटा गया है।

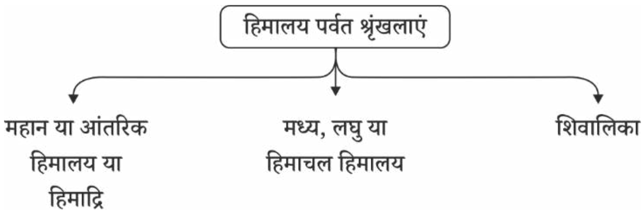

I. महान या आंतरिक हिमालय या हिमाद्रि
- ✓ यह मुख्य हिमालय की सबसे उत्तरी श्रेणी है। (सिन्धु से ब्रह्मपुत्र नदी घाटी के बीच)
- ✓ औसत ऊँचाई - 6000 मीटर और चौड़ाई 100 से 200 किमी के बीच है।
- ✓ विस्तार - माउंट नामचा बरवा से नंगा पर्वत (2400 किमी)
- ✓ विशेषताएँ: गहरी घाटियाँ, ऊर्ध्वाधर ढलान, सममित उत्तलता और पूर्ववर्ती जल निकासी।
- ✓ रूपांतरित और अवसादी चट्टानों से बना है।
- ✓ इस श्रेणी की ढलान उत्तर की ओर कोमल और दक्षिण की ओर तीव्र है।
- ✓ प्रमुख ग्लेशियर - रोंगबुक ग्लेशियर (हिमाद्रि में सबसे बड़ा), गंगोत्री, ज़ेमू आदि।
- ✓ तलछट से भरी अनुदैर्ध्य घाटियों द्वारा लघु हिमालय से अलग, जिन्हें दून के नाम से जाना जाता है। जैसे: पाटली दून, चौकम्बा दून, देहरादून आदि।

नोट: देहरादून को सबसे बड़ा दून माना जाता है जिसकी लंबाई लगभग 35 से 45 किलोमीटर और चौड़ाई लगभग 22-25 किलोमीटर है।

हिमालय की कुछ सबसे ऊंची चोटियां

चोटी	देश	ऊँचाई (मीटर में)
माउंट एवरेस्ट	नेपाल	8848
कंचनजंगा	भारत	8598
मकालू	नेपाल	8481
धौलगिरी	नेपाल	8172
नंगा पर्वत	भारत	8126
अन्नपूर्णा	नेपाल	8078
नंदा देवी	भारत	7817
कमेट	भारत	7756
नामचा बारवा	भारत	7756
गुरला मंधाता	नेपाल	7728

II. मध्य/लघु/हिमाचल हिमालय
- ✓ सबसे ऊबड़-खाबड़ पर्वत प्रणाली और दक्षिण में शिवालिक और उत्तर में महान हिमालय के बीच स्थित है।

Unleash the topper in you

✓ इस क्षेत्र की चट्टानें अत्यधिक खिंचाव और संपीड़न के कारण कायांतरित हो गई हैं। इसलिए, इस श्रेणी में मुख्य रूप से कायांतरित चट्टानें हैं।
✓ औसत ऊंचाई - 3,700 - 4,500 मीटर और औसत चौड़ाई - 50 से 80 किमी।
✓ पर्वतमाला - पीर पंजाल, धौलाधार, नागटिब्बा, मसूरी
✓ कश्मीर की प्रसिद्ध घाटी, हिमाचल प्रदेश में कांगड़ा और कुल्लू घाटी।
  ▪ शिमला, मसूरी और दार्जिलिंग जैसे हिल स्टेशनों के लिए प्रसिद्ध है।
✓ ये श्रेणियाँ झेलम और चिनाब नदी द्वारा काटी गई हैं।
✓ जम्मू और कश्मीर में पीर पंजाल और हिमाचल प्रदेश में धौलाधार इस श्रेणी के स्थानीय नाम हैं।
✓ इस श्रेणी की दक्षिण की ओर की ढलानें खड़ी हैं और आमतौर पर वनस्पति से रहित हैं। इस श्रेणी की उत्तर की ओर की कोमल ढलानें घनी वनस्पति से ढकी हुई हैं।
✓ इन पर्वतमालाओं में शीतोष्ण घास के मैदान पाए जाते हैं जिन्हें कश्मीर में मर्ग (गुलमर्ग, सोनमर्ग) और उत्तराखंड में बुग्याल और पयाल के नाम से जाना जाता है।
✓ करेवा - कश्मीर घाटी में पाए जाने वाले मोटे हिमनद जमा जो केसर व चावल की खेती के लिए उपयोगी हैं

लघु हिमालय क्षेत्र की महत्वपूर्ण श्रेणियाँ	**क्षेत्र**
पीर पंजाल रेंज	जम्मू और कश्मीर (कश्मीर घाटी के दक्षिण में)
धौलाधर रेंज	हिमाचल प्रदेश
मसूरी रेंज और नाग तिब्बा रेंज	उत्तराखंड
महाभारत लेख	नेपाल

III. शिवालिक:

✓ इसे बाहरी हिमालय के नाम से भी जाना जाता है और यह ग्रेट प्लेन्स और लेसर हिमालय के बीच में स्थित है।
✓ ऊंचाई- 500 - 1500 मीटर।
✓ लंबाई- 2,400 किमी - पोटवार पठार से ब्रह्मपुत्र घाटी तक।
✓ चौड़ाई - 10 किमी – 50 किमी (हिमाचल प्रदेश-अरुणाचल प्रदेश)।
  ▪ 80-90 किमी - तिस्ता और रैदक नदी की घाटी को छोड़कर लगभग सतत।
  ▪ उत्तर-पूर्व भारत से लेकर नेपाल तक घने जंगलों से आच्छादित।
✓ मौसमी धाराओं - चोस द्वारा अत्यधिक विच्छेदित।
✓ शिवालिक और मध्य हिमालय के बीच पाई जाने वाली समतल घाटी को पश्चिम में दून और पूर्व में द्वार कहा जाता है, जो चावल की खेती के लिए बहुत उपयोगी है। उदहारण – देहरादून, पाटलीदून, निहांगद्वार
✓ विभिन्न नाम:

शिवालिक पर्वत श्रृंखला के नाम	**क्षेत्र**
जम्मू पहाड़ियाँ	जम्मू
डाफला, मिरी, एबोर और मिस्मी पहाड़ियाँ	अरुणाचल प्रदेश
धांग रेंज, दूदवा रेंज	उत्तराखंड
चूडिया घाट पहाड़ियाँ	नेपाल

I. पूर्वांचल

✓ निर्माण – बालु पत्थर से।
✓ इस श्रेणी का विस्तार उत्तर से दक्षिण में है।
✓ इंडो-ऑस्ट्रेलियन और बर्मा प्लेट के अभिसरण के कारण निर्मित।
✓ इसमें मुख्य रूप से पटकाई बूम, नागा, मिज़ो और मणिपुर और ब्रेल पहाड़ियाँ शामिल हैं।
✓ इसमें शेल, मडस्टोन, सैंडस्टोन, क्वार्टजाइट जैसी ढीली, खंडित तलछटी चट्टानें हैं।
✓ यह दुनिया में जैव विविधता 36 हॉटस्पॉट में से एक है।
✓ बराक मणिपुर और मिजोरम में एक महत्वपूर्ण नदी है।
✓ इस क्षेत्र में 150-200 सेमी वर्षा होती है, जिसके कारण यहाँ घने जंगल और समृद्ध जैव विविधता पाई जाती है।
✓ ऊँचाई उत्तर से दक्षिण की ओर घटती जाती है।
✓ सर्वोच्च चोटी – फान्पुई (blue mountain)
✓ **प्रमुख पहाड़ियाँ**:

राज्य	**पहाड़ियाँ**
अरुणाचल प्रदेश	डाफला, एबोर, मिश्मी, पटकाई बूम
मेघालय	गारो, खासी, जयंतिया
असम	मिकिर, बराईल
नागालैंड	नागा पहाड़ियाँ (चोटी – सारामती)
मणिपुर	मणिपुर पहाड़
त्रिपुरा	त्रिपुरा पहाड़ियाँ

हिमालय का देशांतरीय विभाजन / क्षेत्रीय विभाजन

नदी घाटियों के आधार पर "सर सिडनी बरार्ड" द्वारा 4 भागो में विभाजित

i. पंजाब हिमालय/कश्मीर हिमालय:

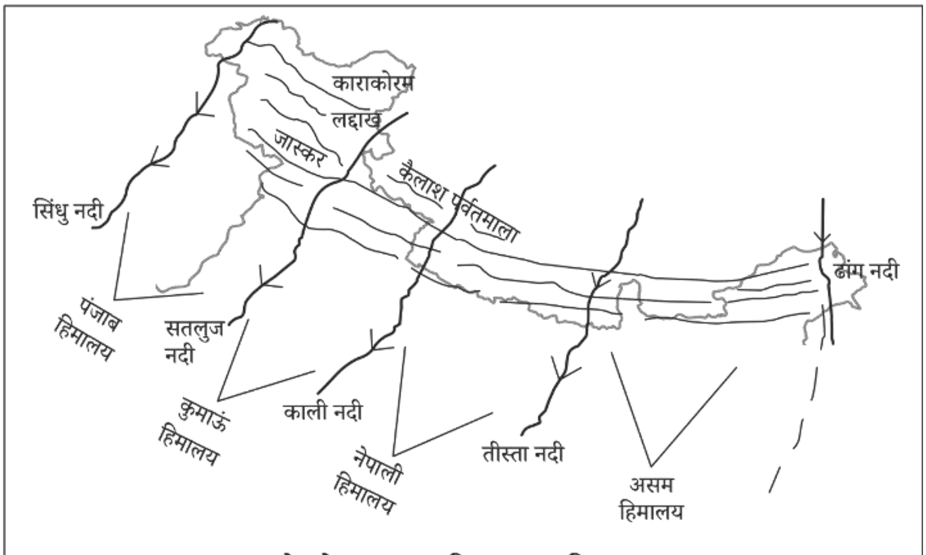

क्षेत्र के आधार पर हिमालय का विभाजन

- ✓ सिंधु और सतलुज नदी के बीच स्थित है।
- ✓ लंबाई- 560 किलोमीटर और चौड़ाई- 400 किलोमीटर
- ✓ जास्कर श्रेणी - उत्तरी सीमा और शिवालिक - दक्षिणी सीमा
- ✓ झेलम के झीलीय निक्षेपों (करेवा – केसर उगाने में सहायक- पुलवामा से पंपोर तक) द्वारा निर्मित।
- ✓ प्रमुख झीलें - वुलर झील, डल झील, आदि।
- ✓ महत्वपूर्ण तीर्थ स्थान- वैष्णोदेवी, अमरनाथ गुफा
- ✓ प्रमुख दर्रे- बुर्जिला दर्रा, ज़ोज़िला दर्रा।

ii. कुमाऊँ हिमालय – उत्तराखंड

- ✓ लंबाई - 320 किमी और सतलुज और काली नदी के बीच स्थित।
- ✓ मुख्य पर्वत श्रृंखलाएँ - नाग टिब्बा, धौला धार, मसूरी, और ग्रेटर हिमालय के कुछ हिस्से।
- ✓ मुख्य चोटियाँ - नंदादेवी, कामेत, बदरीनाथ, केदारनाथ आदि।
- ✓ मुख्य नदियाँ – गंगा, यमुना आदि।
- ✓ विश्व प्रसिद्ध फूलों की घाटी इस पर्वत श्रृंखला में स्थित है।
- ✓ गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ, बद्रीनाथ और हेमकुंड साहिब जैसे तीर्थस्थल भी इसी भाग में स्थित हैं।
- ✓ टेक्टोनिक घाटियाँ - कुल्लू, मनाली, और कांगड़ा।
- ✓ भूकंप और भूस्खलन के प्रति अधिक संवेदनशील।

iii. नेपाल हिमालय:

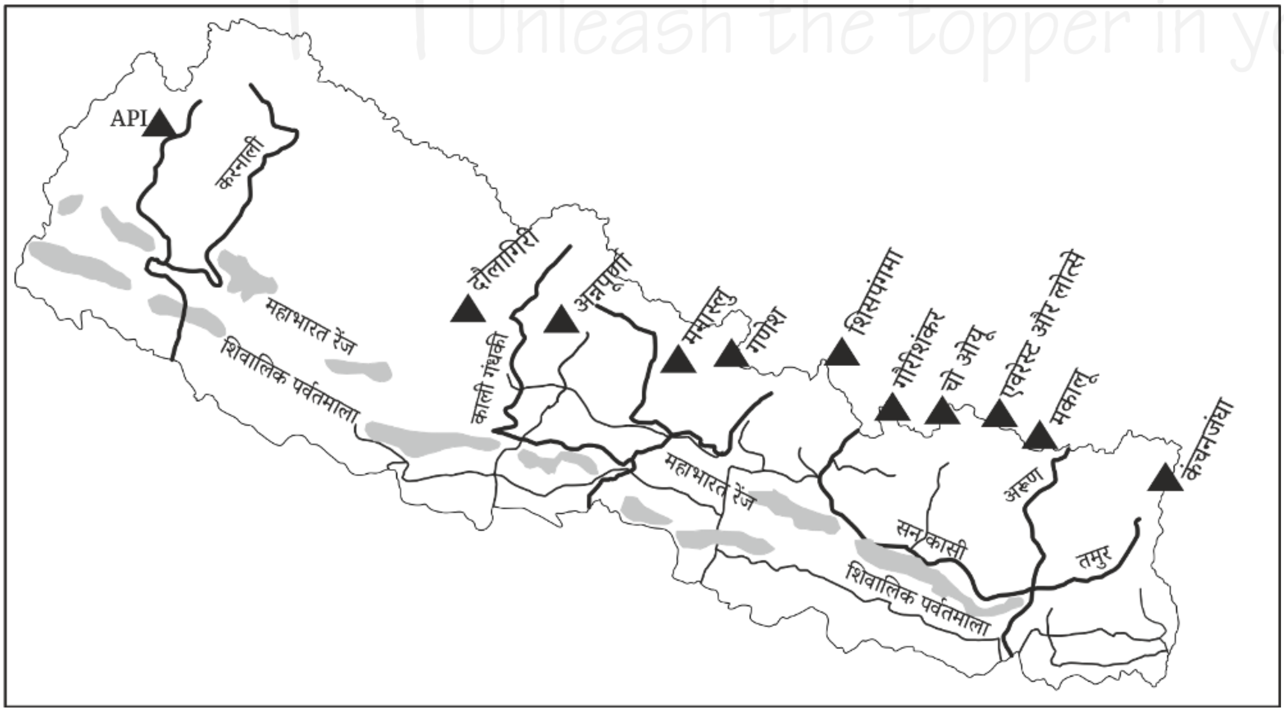

ToppersNotes Unleash the topper in you

- ✓ लंबाई- 800 किमी और पश्चिम में काली नदी और पूर्व में तिस्ता नदी के बीच में।
- ✓ महान हिमालय इस भाग में अधिकतम ऊंचाई प्राप्त करता है।
- ✓ प्रमुख चोटियाँ- माउंट एवरेस्ट, कंचनजंगा, मकालू, अन्नपूर्णा, गोसाईंथन और धौलागिरी।
- ✓ प्रमुख नदियाँ- घाघरा, गंडक, कोसी, आदि।
- ✓ प्रमुख घाटियाँ- काठमांडू और पोखरा झील घाटियाँ।
- ✓ इस क्षेत्र में दुआर स्थलाकृतियाँ पाई जाती हैं जो चाय के बागान लगाने के लिए उपयोगी हैं।

iv. असम हिमालय:

- ✓ लंबाई- 720 किमी और पश्चिम में तिस्ता और पूर्व में ब्रह्मपुत्र (दिहांग घाटियों) के बीच स्थित है।
- ✓ मुख्यतः अरुणाचल प्रदेश और भूटान में स्थित।
- ✓ वर्षा 200 सेंटीमीटर से अधिक और भारी वर्षा के कारण नदियों द्वारा कटाव अधिक होता है।
- ✓ यहाँ मोंपा, अबोर, मिश्मी और नागा जैसी जनजातियाँ निवास करती हैं।
- ✓ महत्वपूर्ण चोटियाँ - नामचा बारवा (7756 मीटर), कूला कांगरी (7554 मीटर), चुमलधरी (7327 मीटर)।

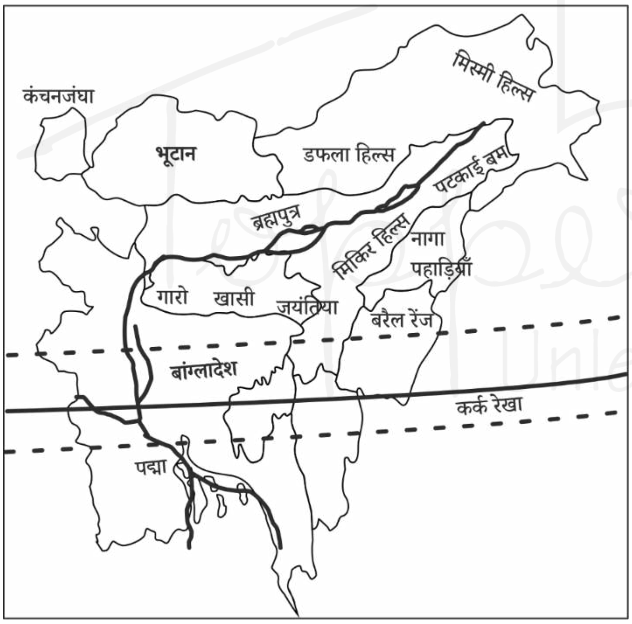

- ✓ प्रमुख पहाड़ियाँ - अका पहाड़ियाँ, डफला पहाड़ियाँ, मिरी पहाड़ियाँ, अबोर पहाड़ियाँ, मिशमी पहाड़ियाँ, और नामचा बरवा, पटकाई बम, मणिपुर पहाड़ियाँ, ब्लू माउंटेन, त्रिपुरा रेंज और ब्रेल रेंज।
- ✓ प्रमुख दर्रे- बोमडी ला, योंग याप, दीफू, पंगसाउ, त्से ला, दिहांग, देबांग, तुंगा और बोम ला।

> नोट - अंडमान और निकोबार द्वीप समूह पूर्वी हिमालय का विस्तार हैं।

हिमालय के महत्वपूर्ण दर्रे

i. जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के दर्रे

बनिहाल पास	पीर-पंजाल रेंज में स्थित। जवाहर टनल
जोजिला	श्रीनगर को कारगिल और लेह से जोड़ता है।
बुर्जिला	श्रीनगर- किशन गंगा घाटी। कश्मीर घाटी को लद्दाख के देवसाई मैदानों से जोड़ता है। श्रीनगर से गिलगिट को जोड़ता है।
पीर-पंजाल पास	जम्मू से श्रीनगर का एक पारंपरिक पास। जम्मू से कश्मीर घाटी तक पहुँचने का सबसे छोटा सड़क मार्ग।
खारदुंग ला	लेह और सियाचिन ग्लेशियर को जोड़ता है। लद्दाख रेंज में स्थित।
थुंगला	लद्दाख में स्थित।
अघिल पास	काराकोरम में माउंट गोडविन-ऑस्टिन के उत्तर में।

ii. अन्य दर्रे:

राज्य	दर्रा
हिमाचल प्रदेश	शिपकी ला, बारा लाचा, डेबसा और रोहतांग पास
उत्तराखंड	लिपुलेख, माना और निती पास
सिक्किम	नाथू ला और जेलेप ला पास
अरुणाचल प्रदेश	बामडी ला, दिहांग, डिफू और पांगसान पास
मणिपुर	तुजू दर्रा

हिमालय का महत्व

- ➢ यह साइबेरिया से आने वाली ठंडी हवा से भारत की रक्षा करता है।
- ➢ सिंधु, गंगा आदि विभिन्न नदियों का उद्गम स्थल।
- ➢ पाकिस्तान और चीन के साथ प्राकृतिक सीमा बनाता है।
- ➢ समृद्ध जैव विविधता और वनस्पति पाई जाती है।
- ➢ हिल स्टेशन और धार्मिक स्थल पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। जैसे – शिमला, कसौल, रानीखेत।
- ➢ हिमालय से निकलने वाली नदियों द्वारा लाए गए तलछट से बना भारत का सबसे उपजाऊ मैदान।

उत्तरी मैदानी क्षेत्र

- ➢ शिवालिक के दक्षिण में स्थित है एवं हिमालयन फ्रंट फॉल्ट (HFF) द्वारा अलग किया गया है।
- ➢ सिंधु, गंगा, ब्रह्मपुत्र और उनकी सहायक नदियों के जलोढ़ अवसाद से निर्मित उत्क्रमण मैदान।

➢ पश्चिम से पूर्व की ओर लगभग 3,200 किमी तक फैला हुआ है।
➢ इन मैदानों की औसत चौड़ाई 150-300 किमी के बीच है।
➢ इसमें हिमालय और प्रायद्वीपीय क्षेत्र की नदियों द्वारा लाए गए जलोढ़ जमाव शामिल हैं। इसलिए यह अत्यधिक उपजाऊ है और कृषि के लिए उपयोग किया जाता है।
➢ दक्षिण-पश्चिम में थार रेगिस्तान में विलीन हो जाता है।

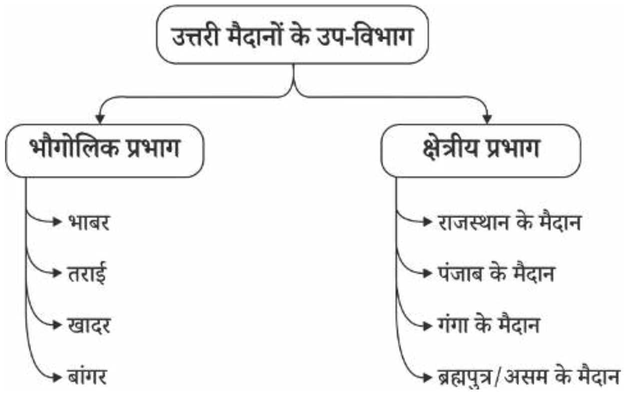

उत्तरी मैदानों का भौगोलिक विभाजन

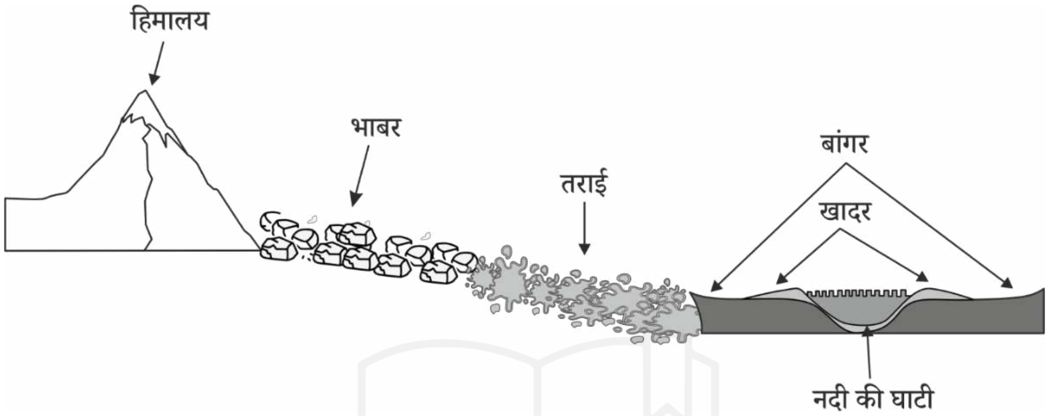

(i) भाबर:
✓ सिंधु से लेकर तिस्ता तक विस्तृत।
✓ 8-16 किमी चौड़ी पट्टी जिसमें बजरी और बड़े अवसाद शामिल है।
✓ सबसे अनूठी विशेषता - छिद्रण।
✓ कृषि के लिए उपयुक्त नहीं है।
✓ पूर्व में तुलनात्मक रूप से संकीर्ण और पश्चिमी और उत्तर-पश्चिमी पहाड़ी क्षेत्र में व्यापक है।

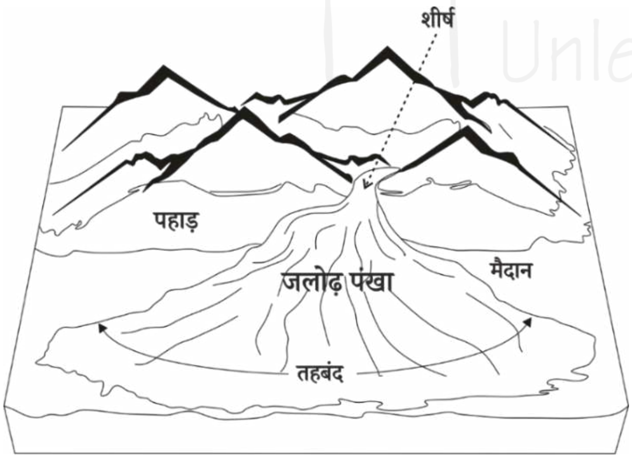

(ii) तराई:
✓ भाबर के दक्षिण में 15-30 किमी चौड़ा क्षेत्र और उसके समानांतर चलता है।
✓ इस क्षेत्र में नदी पुनः सतह पर नजर आती है।
✓ यहाँ अत्यधिक वर्षा होती है तथा अत्यधिक आर्द्रता होती है। अतः वन्यजीवों का विकास अधिक।
✓ यहाँ भूमिगत धाराएँ हैं और यह क्षेत्र दलदली है। अतः अस्वस्थकारी परिस्थितियां पाई जाती है।
✓ गेहूँ, मक्का, चावल, और गन्ना आदि के लिए उपयुक्त (स्थान – पंजाब, उत्तरप्रदेश) है।

(iii) खादर:
✓ नदी के दोनों और नए जलोढ़ अवसादों से निर्मित मैदान।
✓ व्यापक कृषि के लिए उपयुक्त।
✓ पंजाब-हरियाणा के मैदानों में नदियों के खादर के चौड़े बाढ़ मैदान हैं, जिनके किनारे ढलान होती हैं जिन्हें धाया कहते हैं।

(iv) बांगर या भांगर मैदान:
✓ पुराने जलोढ़ के जमाव से निर्मित उच्चभूमियाँ (जलोढ़ सीढ़ीनुमा मैदान)।
✓ मैदानों की बाढ़-सीमा से ऊपर स्थित है।
✓ इसका मुख्य घटक मिट्टी है और इसमें ह्यूमस प्रचुर मात्रा में होता है।
✓ इसमें कैल्शियम कार्बोनेट की गाँठें होती हैं जिन्हें 'कंकर' कहा जाता है। (भूड कहा जाता है जो कंकड़ युक्त पथरीली भूमि होती है।)
✓ बारिंद मैदान- बंगाल का डेल्टाई क्षेत्र।
✓ 'रेह', 'कोलार' या 'भूर' - शुष्क क्षेत्र- खारे और क्षारीय उत्प्लावन के छोटे-छोटे क्षेत्र प्रदर्शित करते हैं।

महान मैदानों का क्षेत्रीय वर्गीकरण

(i) राजस्थान के मैदान

- ✓ अरावली के पश्चिम में थार रेगिस्तान है।
- ✓ पूर्वी भाग चट्टानी है जबकि पश्चिमी भाग में रेत के टीले हैं।
- ✓ इसमें गनीस, शिस्ट और ग्रेनाइट की कुछ चट्टानें हैं।
    - ▪ यह प्रमाण है कि यह भूगर्भीय रूप से प्रायद्वीपीय पठार का हिस्सा है।
- ✓ इसके पूर्वी भाग चट्टानी है जबकि पश्चिमी भाग में रेत के टीले हैं।

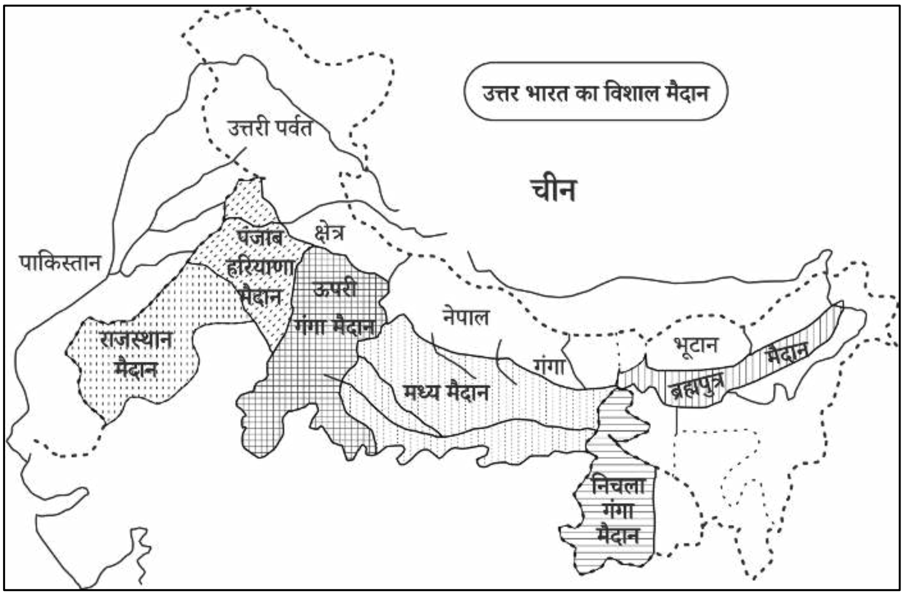

(ii) पंजाब के मैदान

✓ जेच/चाज दोआब	✓ झेलम और चिनाब नदियाँ
✓ रेचना दोआब	✓ चिनाब और रावी नदियाँ
✓ बारी दोआब	✓ रबी और ब्यास नदियाँ
✓ बिस्त दोआब	✓ ब्यास और सतलुज नदियाँ

- ✓ सिंधु प्रणाली की 5 महत्वपूर्ण नदियों द्वारा निर्मित: झेलम, चिनाब, रावी, सतलुज और व्यास।
- ✓ कई दोआबों में विभाजित।
- ✓ पूर्वी सीमा - दिल्ली-अरावली पहाड़ी।
- ✓ उच्च कृषि उत्पादकता।
- ✓ घग्गर और यमुना नदियों के बीच का क्षेत्र - 'हरियाणा क्षेत्र'।
    - ▪ यमुना और सतलुज नदियों के बीच जल-विभाजन

(iii) गंगा का मैदान

- ✓ गंगा और उसकी सहायक नदियों द्वारा निर्मित।
- ✓ पश्चिम में यमुना नदी से लेकर बांग्लादेश की पश्चिमी सीमाओं तक (लगभग 1,400 किमी) विस्तृत है।
- ✓ औसत चौड़ाई - 300 किमी।
- ✓ प्रायद्वीपीय नदियाँ - चंबल, बेतवा, केन, सोन, आदि (गंगा नदी प्रणाली में मिलती हैं) भी इस मैदान के निर्माण में योगदान देती हैं।
- ✓ ढलान - पूर्व और दक्षिण-पूर्व की ओर।
- ✓ नदियाँ अपने मार्ग बदलती रहती हैं, जिससे यह क्षेत्र अक्सर बाढ़ के प्रति संवेदनशील होता है।
- ✓ यहाँ सर्वाधिक जनसँख्या घनत्व पाया जाता है।

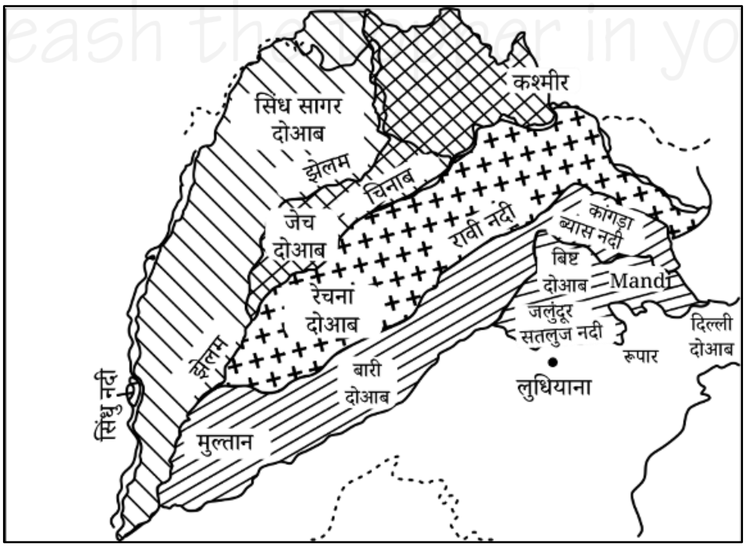

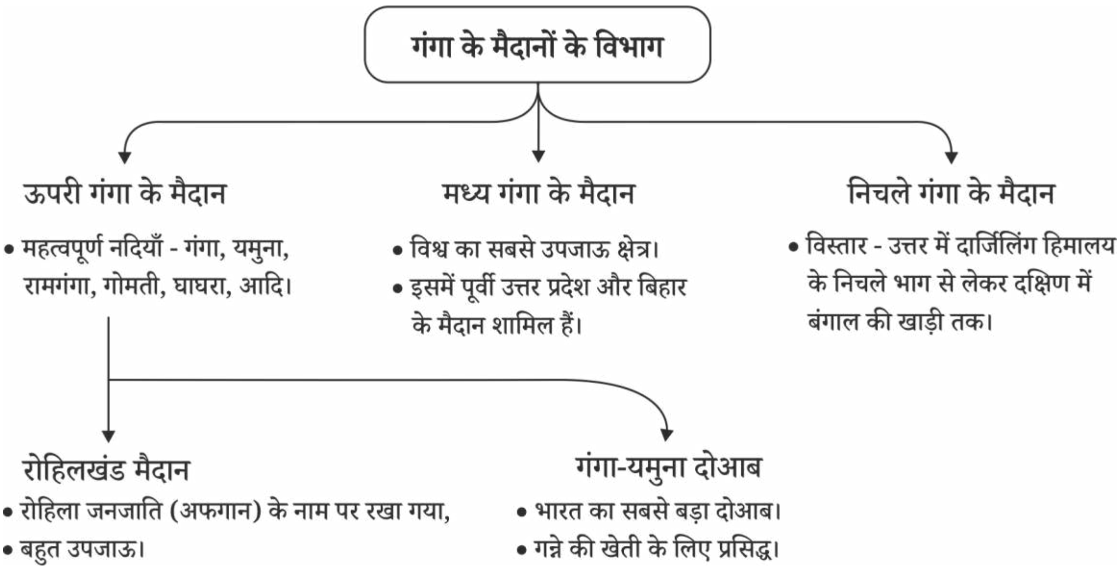

(iv) ब्रह्मपुत्र/असम मैदान

- ✓ ब्रह्मपुत्र और उसकी सहायक नदियों द्वारा निर्मित।
- ✓ महान मैदानों का सबसे पूर्वी भाग।
- ✓ सादिया (पूर्व में) से धुबरी (पश्चिम में बांग्लादेश सीमा के पास) तक फैला हुआ है।
- ✓ माजुली (क्षेत्रफल 929 वर्ग किमी) - दुनिया का सबसे बड़ा नदी द्वीप।
- ✓ काम्पीय मिट्टी से बना उपजाऊ मैदान

मैदानों का महत्व

- ➢ देश के कुल क्षेत्रफल का <1/4 हिस्सा बनाते हैं
- ➢ देश की कुल जनसंख्या के >40% का भरण-पोषण करते हैं।
- ➢ उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी, समतल सतह, धीमी गति से बहने वाली बारहमासी नदियाँ और अनुकूल जलवायु - गहन कृषि गतिविधि।
- ➢ पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भाग में व्यापक सिंचाई - भारत का अन्न भंडार (प्रेयरी - दुनिया का अन्न भंडार)।
- ➢ सड़कों और रेलवे का एक घनिष्ठ नेटवर्क है - बड़े पैमाने पर औद्योगिकीकरण और शहरीकरण।
- ➢ सांस्कृतिक पर्यटन: तीर्थयात्रा के केंद्र - हरिद्वार, अमृतसर, वाराणसी, इलाहाबाद, आदि।

तटीय मैदान

- ➢ क्षेत्रफल- 7516.6 किमी
- ➢ "कच्छ प्रायद्वीप" से "स्वर्ण रेखा नदी" के बीच स्थित है।
- ➢ राज्य- गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, ओडिशा, पश्चिम बंगाल और केंद्र शासित प्रदेश- दमन और दीव और पुडुचेरी।
- ➢ नदियों द्वारा तलछट जमा द्वारा निर्मित।

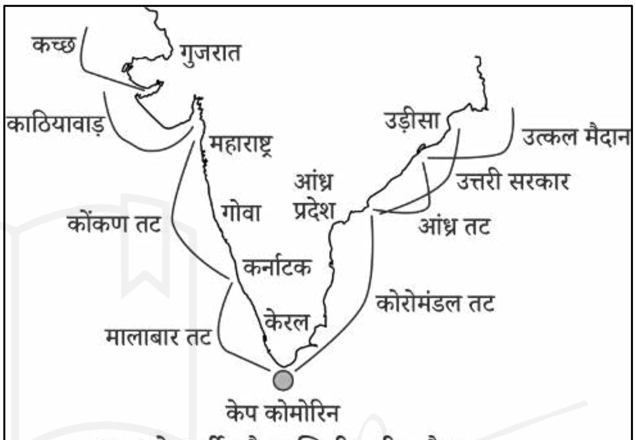

भारत के पूर्वी और पश्चिमी तटीय मैदान

- ➢ भारत में तटीय मैदान 2 प्रकार के हैं:

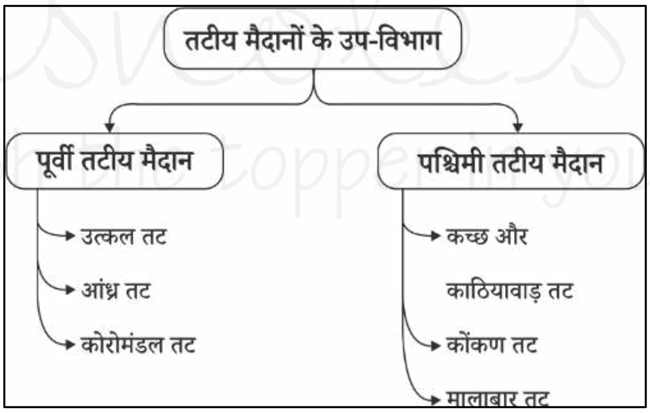

पूर्वी तटीय मैदान

- ➢ स्थान: बंगाल की खाड़ी और पूर्वी घाट के बीच
- ➢ चौड़ाई: 100 – 130 किमी
- ➢ स्वर्ण रेखा से कन्याकुमारी के बीच स्थित है।
- ➢ गोदावरी, महानदी, कावेरी और कृष्णा के डेल्टाओं द्वारा निर्मित।
- ➢ मुख्य झीलें – चिल्का झील और पुलिकट झील (लैगून)।
- ➢ कृषि के लिए बहुत उपजाऊ।
  - ✓ कृष्णा नदी का डेल्टा - दक्षिण भारत का अनाज भंडार।

- **उभरता हुआ क्षेत्र-**
  - ✓ महाद्वीपीय शेल्फ (Continental shelf) समुद्र में 500 किमी तक फैला हुआ है, जिससे अच्छे बंदरगाह और पत्तन का विकास करना कठिन हो जाता है।
- **विभाजन**:

उत्कल तट	➢ मुख्यतः ओडिशा में स्थित, चिल्का और कोलेरू झील के बीच फैला हुआ ➢ पश्चिमी तटीय मैदानों से काफी चौड़ा ➢ निर्माण – महानदी के डेल्टा द्वारा ➢ मुख्य फसलें: चावल, नारियल और केला ➢ चिल्का झील (भारत की सबसे बड़ी लवणीय झील) स्थित है।
आंध्र तट	➢ कोलेरू और पुलिकट झील के बीच ➢ कृष्णा और गोदावरी नदियों द्वारा निर्मित ➢ श्री हरिकोटा द्वीप स्थित है।
तमिलनाडु का मैदान/ कोरोमंडल तट (पायन घाट)	➢ निर्माण कृष्णा और गोदावरी के डेल्टा से होता है। ➢ गर्मियों में शुष्क तथा सर्दियों के दौरान वर्षा होती है। ➢ इसे "दक्षिणी भारत का खाद्यान्न का कटोरा" कहते है।

पश्चिमी तटीय मैदान

- उत्तर में कच्छ की खाड़ी से कन्याकुमारी तक फैला हुआ है।
- ये संकीर्ण मैदान हैं क्योंकि नदियाँ नद्मुख बनाती हैं।
- ये जलमग्न तट हैं
  - ✓ बंदरगाह और पत्तन के विकास के लिए प्राकृतिक परिस्थितियाँ प्रदान करता है।
  - ✓ उदाहरण के लिए कांडला, मझगांव, जेएलएन बंदरगाह नव्हा शेवा, मरमगाओ, मैंगलोर, कोचीन, आदि।
- नदियाँ कोई डेल्टा नहीं बनाती हैं।
- कयाल - बैकवाटर या उथले लैगून या समुद्र के इनलेट और समुद्र तट के समानांतर स्थित हैं।
- भाग – 1. कच्छ, 2. काठियावाड़, 3. गुजरात, 4. कोंकण, 5. कन्नड़, 6. मलबार

कच्छ और काठियावाड़ तट	➢ कच्छ का निर्माण सिंधु नदी द्वारा होता है। ✓ लवणीयता अधिक ✓ इसे महान रन (उत्तर) और छोटे रन (पूर्व) में विभाजित किया गया है। ➢ काठियावाड़ - कच्छ के दक्षिण में स्थित।
कोंकण तट	➢ गोवा व महाराष्ट्र में स्थित। ➢ चावल और काजू - दो महत्वपूर्ण फसलें ➢ आम्र वर्षा – मानसून पूर्व वर्षा।
मालाबार तट	➢ मंगलौर से कन्याकुमारी के बीच ➢ अपेक्षाकृत चौड़ा ➢ लैगून झीले स्थित जैसे – अष्टमुड़ी, बैम्बानाड ➢ मानसून में अधिकतम वर्षा होती है।

लंबी भारतीय तटरेखा का महत्व

- तटीय क्षेत्रों में समशीतोष्ण जलवायु होती है, इसलिए लंबी तटरेखा कई क्षेत्रों को अनुकूल जलवायु प्रदान करती है (तापमान में कोई चरम स्थिति नहीं)।
- समुद्री व्यापार का विकास करता है।
- यह भारत के विशेष आर्थिक क्षेत्र (Exclusive Economic Zone) में खनन, तेल अन्वेषण और प्राकृतिक गैस की सुविधा प्रदान करता है।
- मैंग्रोव, कोरल रीफ, मुहाना और लैगून जैसे प्रचुर तटीय और समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र में पर्यटन की बहुत संभावना है। उदाहरण के लिए, गोवा अच्छे समुद्र तट प्रदान करता है।
- तटीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए मछली पकड़ना एक महत्वपूर्ण व्यवसाय है।
- भारत के तटीय क्षेत्रों में ऑन-शोर पवन ऊर्जा फार्मों की बहुत संभावना है।
- केरल तट की रेत में मोनाजाइट है जिसका उपयोग परमाणु ऊर्जा के लिए किया जाता है।

भारतीय रेगिस्तान

- थार रेगिस्तान का लगभग 85% हिस्सा भारत में है, शेष पाकिस्तान में है।
- यह भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 4.56% है।

- भौगोलिक विशेषताएँ:
  - ✓ थार रेगिस्तान का कुछ हिस्सा राजस्थान में और कुछ हिस्सा गुजरात, पंजाब और हरियाणा में स्थित है।
  - ✓ इसका क्षेत्रफल 2,00,000 वर्ग किमी से अधिक है।
  - ✓ वार्षिक वर्षा 150 मिमी से कम, कम वनस्पति आवरण के साथ शुष्क जलवायु।
  - ✓ रेगिस्तानी भूमि की प्रमुख विशेषताएँ - मशरूम जैसी चट्टानें, हिलते हुए टीले और नखलिस्तान (oasis) (ज्यादातर इसके दक्षिणी भाग में)।

रेगिस्तान का महत्व

- सौर और पवन जैसी नवीकरणीय ऊर्जा का समृद्ध स्रोत।
- कोयला, संगमरमर, जिप्सम और इमारती पत्थर जैसे विभिन्न खनिज पाए जाते हैं।
- भौगोलिक विविधता के कारण पर्यटन के लिए महत्वपूर्ण।

- अंतर्राष्ट्रीय सीमा के निकट स्थित होने के कारण यह भारत के लिए रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है।
- पेट्रोलियम और कच्चे तेल का समृद्ध स्रोत।

प्रायद्वीपीय पठार

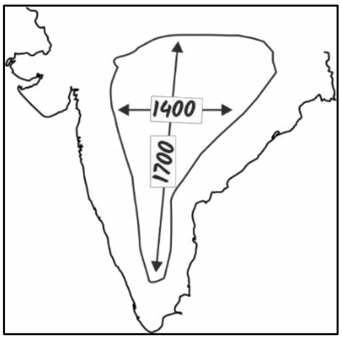

- लगभग त्रिकोणीय आकार में।
- विस्तार:
  - ✓ उत्तर-पश्चिम- दिल्ली रिज
  - ✓ पूर्व में- राजमहल पहाड़ियाँ
  - ✓ पश्चिम में- गिर पर्वतमाला
  - ✓ दक्षिण- कार्डेमम पहाड़ियाँ
- क्षेत्रफल - 16 लाख वर्ग किमी (पूरा भारत 32 लाख वर्ग किमी है)।
- ऊँचाई - समुद्र तल से 600-900 मीटर (क्षेत्र दर क्षेत्र अलग-अलग)।
- अधिकांश नदियाँ पश्चिम से पूर्व की ओर बहती हैं जो सामान्य ढलान को दर्शाती हैं।
  - ✓ अपवाद: नर्मदा-ताप्ती पूर्व से पश्चिम की ओर बहती है।
- पृथ्वी के सबसे पुराने और सबसे स्थिर भू-आकृतियों में से एक।
- खनिज संपन्न प्रदेश है।
- यह मुख्यतः आर्कियन ग्नीसिस और शिस्ट से बना एक अत्यधिक स्थिर ब्लॉक है।
- इसमें विभिन्न पठारी क्षेत्र जैसे: हजारीबाग पठार, पलामू पठार, रांची पठार, मालवा पठार, कोयंबटूर पठार और कर्नाटक पठार आदि शामिल हैं।
- महत्वपूर्ण भौगोलिक विशेषताएँ: टोर, ब्लॉक पर्वत, दरार घाटियाँ, ऊबड़-खाबड़ पहाड़ियों की श्रृंखला और दीवारनुमा क्वार्टजाइट डाइक जो जल भंडारण के लिए प्राकृतिक स्थल प्रदान करते हैं।

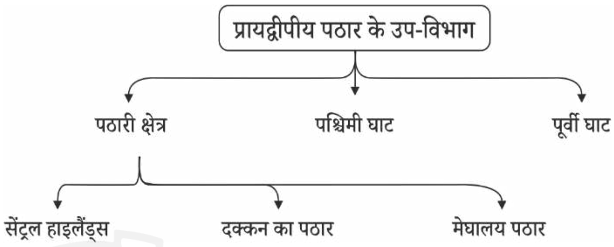

पठारी क्षेत्र

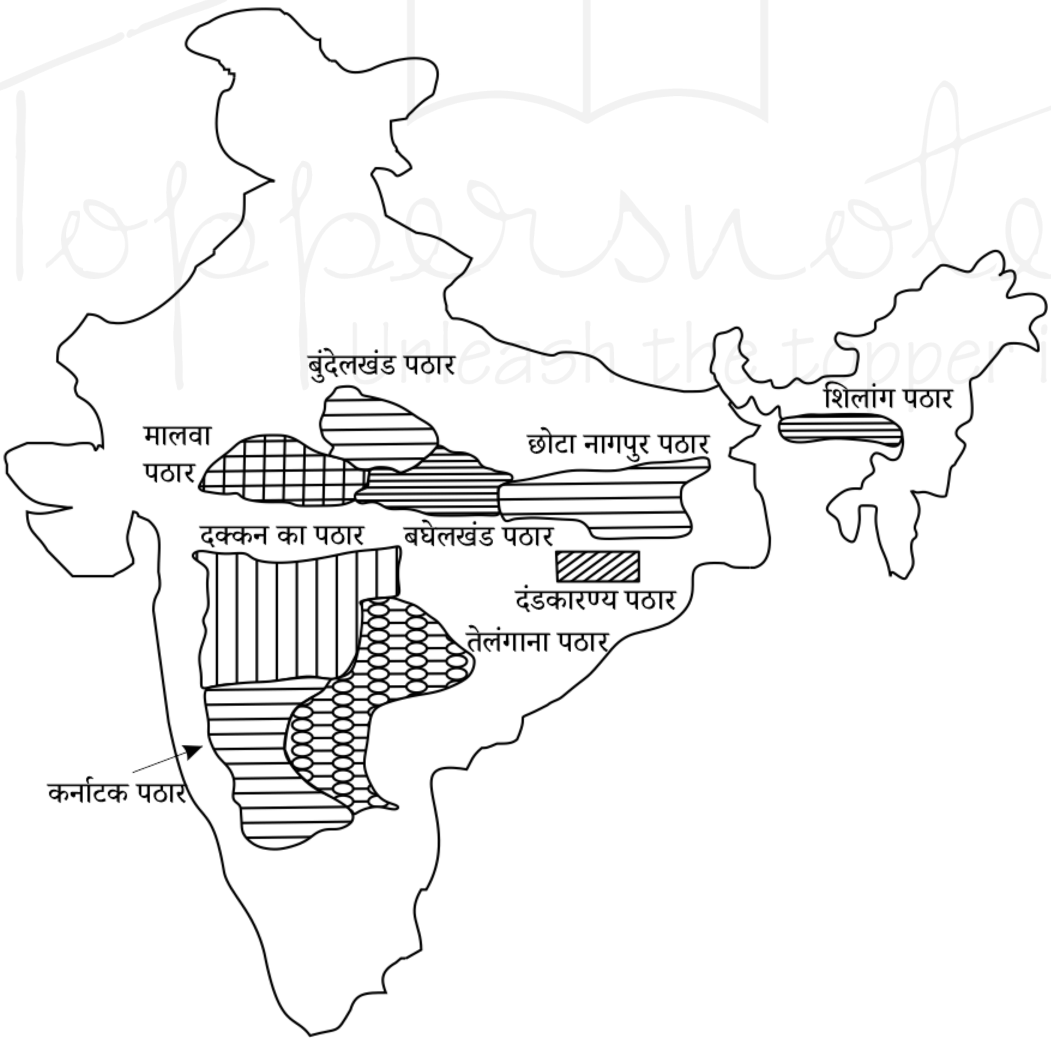

केंद्रीय उच्च भूमि

- इसे मध्य भारत पठार, मध्य भारत पठार या केंद्रीय उच्च भूमि के नाम से भी जाना जाता है।
- मेवाड़ उच्च भूमि के पूर्व में स्थित है।
- स्थान:
  - ✓ नर्मदा नदी के उत्तर में।
  - ✓ अरावली पर्वत श्रृंखला के पश्चिम में।
  - ✓ सतपुड़ा पर्वत श्रेणियों के दक्षिण में (ढलानदार पठारों की एक श्रृंखला द्वारा निर्मित)।
- ढलान - उत्तर और उत्तर पूर्वी दिशाएँ।
- नदियाँ:
  - ✓ चंबल नदी - दरार घाटी।
  - ✓ काली सिंध - राणा प्रताप सागर से बहती है।
    - सहायक नदियाँ - बनास, परवन और पार्वती।

✓ पर्वतश्रृंखला:

अरावली पर्वत श्रृंखला	➢ यह भारत की प्राचीन वलित पर्वतमाला है। ➢ गुजरात में पालनपुर से दिल्ले के रायसीना तक विस्तृत है। ➢ यह मुख्यतः अवसादी (sedimentary) और रूपांतरित चट्टानों (metamorphosed rocks) से बनी हुई है। ➢ ऊँचाई- 400-600 मीटर (कुछ पहाड़ियाँ 1,000 मीटर से भी अधिक ऊँची हैं)।
विंध्यन पर्वतमाला	➢ यह कई उत्तर की ओर बहने वाली नदियों का स्रोत है, जो यमुना से मिलती हैं। ➢ यह एक खंड पर्वत है जो चूना पत्थर से निर्मित है। ➢ मध्य भारत के जल विभाजन को प्रस्तुत करती है। ➢ प्रमुख नदी: माही ➢ यह नर्मदा-सोन घाटी के समानांतर एक ढलान के रूप में फैली हुई है। ➢ स्थान: गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड की सीमा। ➢ यह अधिकांशत: प्राचीन अवसादी चट्टानों (sedimentary rocks) से बनी हुई है। ➢ गंगा और प्रायद्वीपीय नदी प्रणालियों के बीच जलविभाजक।
सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला	➢ यह नर्मदा और तापी नदियों के बीच स्थित है, और महाराष्ट्र- मध्य प्रदेश सीमा के समानांतर चलती है। ➢ यह गुजरात (राजपीपला पहाड़ियाँ) से छत्तीसगढ़ तक फैली हुई है। ➢ इसका प्रमुख हिस्सा मध्य प्रदेश में स्थित है। ➢ इसे चार भागों में बांटा गया है राजपीपला पहाड़ियाँ, गविलगढ़ पहाड़ियां, महादेव पहाड़ियाँ और मैकाल पहाड़ियाँ
	➢ भारत की सबसे बड़ी दरार घाटी वाला एक ब्लॉक पर्वत। ➢ प्रमुख नदियाँ: नर्मदा और तापी ➢ सबसे ऊँची चोटी- धूपगढ़ (1,350 मीटर) पचमढ़ी (महादेव पहाड़ियाँ) के पास। ➢ अमरकंटक (1,127 मीटर) - सबसे ऊँची चोटी ➢ मैकाल पहाड़ियाँ- नर्मदा और सोन का उद्गम।

✓ प्रमुख पठार:

मेवाड़ पठार	➢ यह राजस्थान में अरावली पर्वतों के पूर्व में स्थित है। ➢ बनास नदी और उसकी सहायक नदियों बेडच नदी, खारी नदियों द्वारा निर्मित एक गोलाकार मैदान है ➢ यह मुख्यतः विंध्य काल (Vindhyan period) की बालू, शैल और चूना पत्थर (sandstone, shales, and limestones) से बना हुआ है।
मालवा पठार	➢ यह मध्य प्रदेश में अरावली और विंध्य पर्वत श्रृंखलाओं के बीच स्थित है। ➢ यह व्यापक लावा प्रवाह से बना है, जो काले मिट्टी का निर्माण करता है। जो कपास की कृषि हेतु उपयोगी ➢ भारत की काली कपास मिट्टी फिशर ज्वालामुखी चट्टानों (fissure volcanic rock) के विघटन के कारण बनी है। ➢ नर्मदा नदी - दक्षिणी सीमा। ➢ यह विन्ध्य पहाड़ियों के आधार पर एक त्रिकोण का निर्माण करता है, जो निम्नलिखित सीमाओं से घिरा हुआ है: ✓ अरावली रेंज – पश्चिम ✓ मध्य भारत पठार- उत्तर ✓ बुंदेलखंड- पूर्व।
बुंदेलखंड पठार	➢ उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की सीमाओं पर स्थित है। ➢ तीव्र कटाव, अर्ध-शुष्क जलवायु - खेती के लिए अनुपयुक्त। ➢ औसत ऊँचाई - समुद्र तल से 300-600 मीटर ऊपर। ➢ विंध्यन ढलान से यमुना नदी की ओर ढलान। ➢ नदियाँ: बेतवा, केन।
बघेल खंड पठार	➢ मैकाल पर्वतमाला के उत्तर से पूर्व तक फैला हुआ है। ➢ 3 राज्य - उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़

	➢ गंगा बेसिन को महानदी बेसिन से अलग करता है। ➢ सोन और महानदी के अपवाह तंत्र को अलग करता है। ➢ यहाँ धारवाड़ और गोंडवाना चट्टानें पाई जाती हैं। ➢ प्रमुख कोयला क्षेत्र- सोहागपुर, शहडोल कोयला क्षेत्र ➢ यह मध्य खंड सोन अपवाह प्रणाली (उत्तर) और महानदी नदी प्रणाली के बीच जल विभाजक के रूप में कार्य करता है।
छोटा नागपुर पठार (झारखण्ड में स्थित)	➢ यह प्रायद्वीपीय पठार के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित है। ➢ मुख्य रूप से गोंडवाना चट्टानों से बना है। ➢ औसत ऊँचाई: समुद्र तल से 600 से 700 मीटर ऊपर। ➢ यह एक कोयला भण्डार - समृद्ध पठार है, जिसे भारत की रुर घाटी (Ruhr valley of India) भी कहा जाता है। ➢ प्रमुख नदियाँ: ✓ सोन - उत्तर-पश्चिमी सीमा। ✓ दामोदर, स्वर्णरेखा, उत्तरी कोयल, दक्षिणी कोयल और बराकर। ▪ दामोदर - पश्चिम से पूर्व की ओर दरार घाटी से होकर बहती है। ➢ गोंडवाना कोयला क्षेत्र (भारत में सबसे अधिक कोयला आपूर्ति) यहाँ पाए जाते हैं। ➢ राजमहल पहाड़ियाँ - उत्तरपूर्वी सीमा।
काठियावाड़ पठार	➢ गुजरात के काठियावाड़ क्षेत्र में। ➢ इसमें गिरनार पर्वतमाला, जूनागढ़ पर्वतमाला, पावागढ़ पर्वतमाला आदि जैसी कई पहाड़ी श्रृंखलाएँ हैं। ➢ नल सरोवर झील (पक्षी अभयारण्य) ➢ ज्वालामुखी पहाड़ियाँ- मांडव पहाड़ियाँ और बलदा पहाड़ियाँ। ➢ सबसे ऊँचा स्थान: माउंट गिरनार।

(i) दक्कन का पठार

- ✓ यह क्षेत्र त्रिकोणीय आकार का है।
- ✓ **सीमाएं:**
  - ▪ सतपुड़ा रेंज और विंध्यन रेंज - उत्तरी-पश्चिम
  - ▪ महादेव पहाड़ियाँ और मैकाल रेंज - उत्तर
- ✓ औसत ऊंचाई - 600 मीटर।
- ✓ लावा के अपक्षय से काली मृदा का निर्माण, जो कपास की कृषि हेतु सहायक।
- ✓ ढलान - पश्चिम से पूर्व (नदियों के प्रवाह से प्रमाणित)।
- ✓ भारत का सबसे बड़ा पठार और मूल रूप से ज्वालामुखी उदगार क्षेत्र।
- ✓ काली मिट्टी की पट्टी जिसे डेक्कन ट्रैप कहा जाता है।
  - ▪ कपास और गन्ने की खेती के लिए अच्छा
  - ▪ समृद्ध खनिज संसाधनों का घर
  - ▪ अच्छी जलविद्युत क्षमता।
- ✓ मोटे तौर पर विभाजित:

महाराष्ट्र पठार	➢ दक्कन पठार का उत्तरी भाग। ➢ लावा मूल की बेसाल्टिक चट्टानों से घिरा हुआ। ➢ नदियाँ – गोदावरी और कृष्णा। ➢ काली कपास मिट्टी जिसे रेगुर भी कहते हैं, से ढका हुआ है।
कर्नाटक पठार	➢ महाराष्ट्र पठार के दक्षिण में स्थित है। ➢ बाबा बुदन पहाड़ियाँ - लौह अयस्क ➢ औसत ऊँचाई - 600-900 मीटर। ➢ पश्चिमी घाट से नदियों द्वारा तीव्रता से विच्छेदित। ➢ 2 भाग: ▪ बेंगलूरु का पठार ▪ मैसूर का पठार
तेलंगाना पठार	➢ दक्षिणी भाग उत्तरी भाग की तुलना में ऊँचा है। ➢ धारवाड़ चट्टानों और गोंडवाना चट्टानों (गोदावरी घाटी) से बना है। ➢ प्रमुख नदियाँ- कृष्णा और पेनेरू। ➢ खनिज संसाधनों से समृद्ध। ➢ अच्छी वर्षा (औसतन 100 सेमी/वर्ष)।

(ii) पूर्वोत्तर पठार/ मेघालय पठार

- ✓ यह असम के कार्बी एन्गलोंग पहाड़ियों में स्थित है।
- ✓ यह दक्षिण-पश्चिम मानसून से सर्वाधिक वर्षा प्राप्त करता है।
  - ▪ चेरापूंजी और मासिनराम भारी वर्षा
- ✓ खनिज संसाधनों से समृद्ध - कोयला, लौह अयस्क, सिलिमेनाइट (प्रमुख खनिज), चूना पत्थर और यूरेनियम (लघु खनिज)।
- ✓ 'गारो-राजमहल गैप' इस पठार को मुख्य भाग से अलग करता है।
- ✓ पश्चिमी, मध्य और पूर्वी भाग क्रमश: गारो पहाड़ियाँ (900 मीटर), खासी-जयंतिया पहाड़ियाँ (1,500 मीटर) और मिकिर (रेंगमा) पहाड़ियाँ (700 मीटर) के रूप में जाना जाता हैं।
- ✓ सबसे ऊँचा स्थान - शिलांग (1,961 मीटर)

पश्चिमी घाट

- ➢ अरब बेसिन के अवतलन तथा हिमालय के उत्थान के दौरान पूर्व और उत्तर-पूर्व में प्रायद्वीप के झुकाव से निर्मित।
- ➢ पश्चिमी तटीय मैदान से औसत ऊँचाई 1,000 मीटर।
- ➢ विश्व के जैविक विविधता हॉटस्पॉट में से एक हॉटस्पॉट।
- ➢ यह तापी घाटी (21° उत्तरी अक्षांश) से कन्याकुमारी (11° उत्तरी अक्षांश) के उत्तर तक 1,600 किमी. क्षेत्र में विस्तृत है।

Toppers Notes Unleash the topper in you

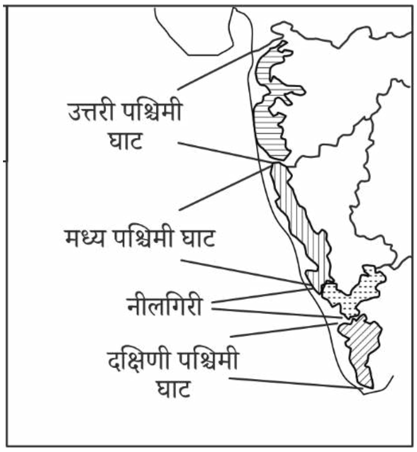

- विस्तार: गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, तमिलनाडु और केरल।
- यूनेस्को को विश्व धरोहर स्थल सूची में शामिल।
- यूनेस्को द्वारा इसे हिमालय से भी पुराना माना जाता है।
- यह आर्द्र दक्षिण-पश्चिम मानसूनी पवनों को रोककर भारतीय मानसून को प्रभावित करता है।
- 3 भाग:

उत्तर सह्याद्री	➢ तापी घाटी से गोवा के उत्तरी भाग तक फैला है। ➢ यह बेसाल्टिक लावा चट्टानों से बना है। ➢ सबसे ऊँची चोटी - कलसुबाई (1,646 मीटर) ➢ महत्वपूर्ण दर्रे: थाल घाट और भोर घाट।
मध्य सह्याद्रि	➢ 16° उत्तरी अक्षांश से नीलगिरी पहाड़ियों तक। ➢ पश्चिम की ओर बहने वाली धाराओं के कटाव से विच्छेदित पश्चिमी ढलान। ➢ प्रमुख चोटियाँ: वावुल माला (2339 मीटर), कुद्रेमुख (1892 मीटर) ➢ यहाँ स्थित बाबा बूदन की पहाड़ियाँ, लौह उत्पादन के लिए प्रसिद्ध हैं।
दक्षिणी सह्याद्रि	➢ पाल घाट गैप (पलक्कड़ गैप) द्वारा मुख्य सह्याद्रि श्रेणी से अलग होता है। ➢ नीलगिरि पहाड़ियों और कन्याकुमारी के बीच स्थित। ➢ पाल घाट गैप - ✓ भ्रंश घाटी ✓ तमिलनाडु के मैदानों को केरल के तटीय मैदानों से जोड़ने के लिए सड़कों और रेलवे लाइनों द्वारा उपयोग किया जाता है। ➢ 3 श्रेणियाँ: ✓ अन्नामलाई (1800-2000 मीटर) - इस श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी अनामुदी (केरल) है ✓ पालनी (900-1,200 मीटर) - तमिलनाडु ✓ कार्डमम हिल्स - इस श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी अगस्तमलाई है।

पूर्वी घाट

- यह ओडिशा से नीलगिरी पहाड़ियों के उत्तर तक विस्तृत है।
- यह भारत के पूर्वी तटीय मैदानों के समानांतर विस्तारित है।
- बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियों द्वारा असंतत और विच्छेदित। पश्चिमी घाट की तुलना में ऊँचाई कम।
- शेषाचलम पहाड़ियाँ जिन्हें तिरुमाला रेंज के नाम से भी जाना जाता है, ये दक्षिण-पूर्वी भारत में दक्षिणी आंध्र प्रदेश में पूर्वी घाट का हिस्सा हैं।
- सबसे ऊँची चोटी – जिन्दागडा चोटी (1690 मीटर)।

- अन्य पहाड़ियाँ- महेंद्र गिरी, नल्लामल्ला, वेलिकोंडा, पालकोंडा, शेषाचलम, गलिकोंडा, सिंक्रम, गुट्टा, माडूगुल कोंडा आदि।
- मुख्य फ़सल – चावल

नोट: साल्हेर
- स्थान : महाराष्ट्र के नासिक जिले के पास स्थित।
- यह सहाद्री पर्वतों में सबसे ऊँचे किले का स्थान है।

नीलगिरी पहाड़ियाँ

यह पहाड़ियाँ कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु की सीमा पर स्थित हैं। यह ब्लॉक माउंटेन हैं और डोड्डाबेट्टा इसकी सबसे ऊँची चोटी है। यहाँ पश्चिमी और पूर्वी घाट मिलते हैं, और यह विश्व के जैव विविधता के हॉटस्पॉट में से एक है। प्रसिद्ध हिल स्टेशन ऊटी तमिलनाडु में स्थित है। यह चाय बागान कृषि के लिए भी प्रसिद्ध है।

पश्चिमी और पूर्वी घाट के बीच अंतर

क्र.सं.	पश्चिमी घाट	पूर्वी घाट
1.	पश्चिमी घाट तापी नदी से कन्याकुमारी तक फैले हुए हैं।	लेकिन पूर्वी घाट महानंदी घाटी से नीलगिरी के दक्षिण में फैले हैं।
2.	औसत चौड़ाई: 50 से 80 किमी	औसत चौड़ाई: 100 से 200 किमी
3.	अधिकांश प्रायद्वीपीय नदियाँ पश्चिमी घाटों से निकलती हैं।	पूर्वी घाटों से कोई प्रमुख नदी नहीं निकलती।
4.	पश्चिमी घाट सतत हैं और इन्हें केवल दर्रों के माध्यम से पार किया जा सकता है।	पूर्वी घाट असतत और निम्न ऊँचाई की पहाड़ियों से मिलकर बने हैं।
5.	औसत ऊँचाई: 900 से 1,600 मीटर।	औसत ऊँचाई: लगभग 600 मीटर।
6.	सबसे ऊँची चोटी: अनाई मुडी (2,695 मीटर)	सबसे ऊँची चोटी: जिंदागड़ा (1,690 मीटर)
7.	पश्चिमी घाट में पर्वतीय प्रकार की वर्षा होती है तथा अरब सागर से आने वाला दक्षिण पश्चिम मानसून, यहाँ भारी वर्षा करता है।	पूर्वी घाट बंगाल की खाड़ी से आने वाले मानसून के लगभग समानांतर स्थित है, इसीलिए यहाँ अधिक वर्षा नहीं होती है।
8.	पश्चिमी घाटों को विभिन्न नामों से जाना जाता है जैसे: ➢ महाराष्ट्र में सह्याद्री ➢ कर्नाटक और तमिलनाडु में नीलगिरी पहाड़ियाँ। ➢ केरल में अनामलाई और इलायची पहाड़ियाँ।	इन्हें निम्नलिखित नामों से जाना जाता है: ➢ उड़ीसा में मालिया और मदुगुला कोंडा श्रेणियाँ। ➢ आंध्र प्रदेश में नल्लामलाई और पालकोंडा श्रेणियाँ ➢ दक्षिण में, ये अलग-अलग निम्न ऊँचाई पहाड़ियों वाली के रूप में विस्तृत हैं – जावदी, शेवरॉय, पंचामलाई, सिरुमलाई, वरुष्णद पहाड़ियाँ।

दक्कन पठार में प्रमुख पर्वतीय दर्रे (मध्य और दक्षिणी भारत)

भोर घाट, थाल घाट	➢ महाराष्ट्र में स्थित है।
पाल घाट	➢ कोयंबटूर (तमिलनाडु) और पलक्कड़ (केरल) के बीच स्थित है।
गोरम घाट	➢ राजस्थान की अरावली पर्वतमाला में स्थित है।
अंबोली घाट पास	➢ महाराष्ट्र, भारत में स्थित है। ➢ यह पश्चिमी घाटों की सह्याद्री श्रृंखला में है। ➢ यह महाराष्ट्र के सावंतवाड़ी को कर्नाटक के बेलगाम से जोड़ता है।
कुंभर्ली घाट पास	➢ यह महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले को देश क्षेत्र के सतारा जिले से जोड़ता है। ➢ महाराष्ट्र, भारत में स्थित है। ➢ स्थान: पश्चिमी घाट

प्रायद्वीपीय क्षेत्र का महत्व

- ➢ खनिज संसाधनों से समृद्ध
  - ✓ गोंडवाना कोयला भंडार का लगभग 98% प्रायद्वीपीय क्षेत्र में पाया जाता है।
- ➢ कृषि:
  - ✓ काली मिट्टी - कपास, मक्का, खट्टे फल आदि की खेती के लिए अनुकूल है।
  - ✓ साथ ही, चाय, कॉफी, मूंगफली आदि की भी खेती की जाती है।
- ➢ वन उत्पाद: टीक, साल की लकड़ी और औषधीय पौधों सहित अन्य वन उत्पाद
- ➢ पर्यटन: ऊटी, महाबलेश्वर, खंडाला आदि जैसे हिल स्टेशन और हिल रिसॉर्ट।

भारत के द्वीप

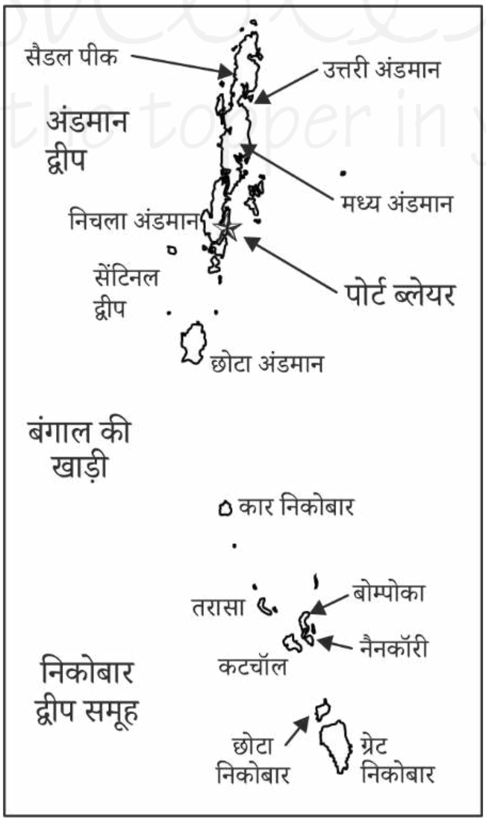

Toppersnotes Unleash the topper in you

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह

- यह द्वीप समूह बंगाल की खाड़ी में स्थित है, जिसकी उत्पत्ति इंडो-ऑस्ट्रेलियाई और बर्मा प्लेट के बीच अभिसरण से हुई है।
- इसमें कुल 572 द्वीप शामिल हैं।
- 3 मुख्य समूह: उत्तर, मध्य और दक्षिण में विभाजित है।
- पोर्ट ब्लेयर - अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह की राजधानी, जो दक्षिण अंडमान में स्थित है।
- ज्वालामुखी द्वीप- बैरन और नार्कोंडम द्वीप (भारत में एकमात्र सक्रिय ज्वालामुखी)।
- सैडल पीक (737 मीटर) उत्तर अंडमान में सर्वोच्च चोटी स्थित है।
- प्रमुख जनजातियाँ- जारेवा, ओंग, सेंटिनलीज़, अंडमानी और निकोबारी।
- अंडमान और निकोबार में महत्वपूर्ण पर्वत चोटियाँ: सैडल पीक, माउंट डियावोलो, माउंट कोयोब और माउंट थुइलर

लक्षद्वीप द्वीप समूह

- यह द्वीप समूह अरब सागर में स्थित है।
- 36 द्वीपों के इस समूह का क्षेत्रफल 32 वर्ग किलोमीटर है।
- प्रवाल भित्तियों से निर्मित है।
- प्रमुख द्वीप - कैनानोर, मिनिकॉय, अमिनकीवी और कावारती।

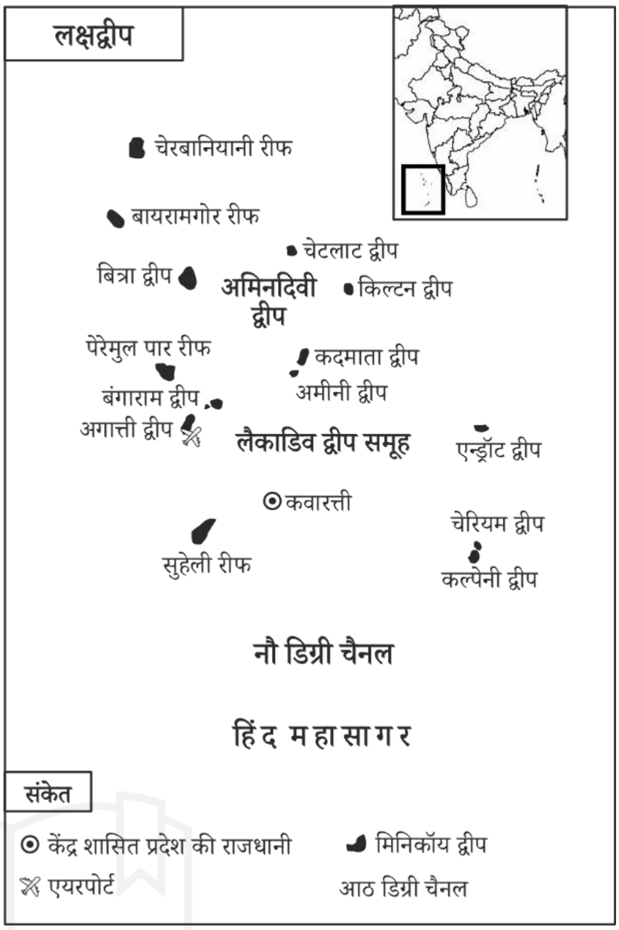

द्वीपों का महत्व

- द्वीपों की प्राकृतिक सुंदरता के कारण पर्यटकों का आकर्षण।
- समृद्ध जैव विविधता और वनस्पति।
- हिंद महासागर में स्थित होने के कारण रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण।
- समुद्री प्रभाव के कारण सम जलवायु।
- आपातकाल में वाणिज्यिक जहाजों को ईंधन, विश्राम और आश्रय प्रदान करने में विशेष महत्व।